PUBLIC REVENUE

Q. no 7

What do you mean by public dormy Explain the deafferents Sources of public revenue?

OR Discuss The tax and to non-tax Raw Rees of public Revenue

सार्वजनिक से आप क्या समझते हैं? इसके ''विभिन्न स्रोतों की व्याख्या कीजिएँ।

अथवा

सार्वजनिक आय के भार एवं गैर कर स्रोतो की व्याख्या कीजिए?

Ans:-

सरकार के विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होने वाले, आय को सार्वजनिक आय कहा जाता हैं। वर्तमान समय में विश्व का अधिकांस देश कल्याणकारी देश हैं। अतः लोगों के कल्याण में वृद्धि करने के लिय एवं आर्थिक नियोजन के लिए भी सार्वजनिक व्यय में लगातार वृद्धि करनी पड़ती है। अतः सार्वजनिक व्यय को पूरा करने के लिए सरकार को आय के विभिन्न स्रोतों की खोज करनी पड़ती हैं।

सार्वजनिक व्यय में वृद्धि होने से राष्ट्रीय आय उत्पादन, रोजगार बचत एवं विनियोग में वृद्धि होती है जिससे देश में विकास की गति तीव्रतर हो जाती हैं।

Pr- Daltan :- ने सार्वजनिक आप की व्याख्या संकुचित एवं विस्तृत अर्थो में किया है। संकुचित अर्थ सार्वजनिक आय के अन्तर्गत करो से सार्वजनिक प्रतिश्ठानों में उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं से प्रशासनिक कार्यों जैसे– कोई फीस Fine Gift आदि से प्राप्त ¨ होने वाले आय को सम्मिलित किया जाता है। विस्तृत अर्थ में सार्वजनिक आय के अन्तर्गत उपरोक्त श्रोतों के अतिरिक्तयाँ के विक्रय से प्राप्त आय भी सम्मिलित किये जाते हैं।

$R_n = T_r + G_p + A_r$

$R_b = R_n + P_d + S_g$

Where

P_r = Public Revenue in narrow Sense (संकुचित अर्थ में सार्वजनिक आय)

G_P= Sell of good of government Enterprises (सार्वजनिक प्रतिश्ठनों के वस्तुओ की विक्री को प्राप्त आय)

R_b = सार्वजनिक प्रतिश्ठनों विस्तृत अर्थ में सार्वजनिक आय

P_d = सार्वजनिक ऋण

S_g= सार्वजनिक परिभाशा के बिक्री से प्राप्त आय।

वर्तमान समय में सरकार आय के विभिन्न श्रोतों का उपयोग केवल आय प्राप्त करने के लिए ही नहीं वितरण की विशमता को दूर करने के लिए, रोजगार में वृद्धि करने के लिए एवं आर्थिक स्वास्थ प्राप्त करने के लिए करती है।

Sources of Public Revenue

(सार्वजनिक आय के विभिन्न श्रोत)

सार्वजनिक आय के विभिन्न श्रोतों को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जाता है।

(a) Tax Revenue

(b) Non Tax Revenue

(a) Tax Revenue- प्राचीन समय में भी राज्यों के आय का प्रमुख स्रोत कर ही रहा है।

Taylor के शब्दों में '' Taxes are compulsory payment to government without exception of direct return in benefit to the taxes payers-

(कर सरकार को दिया जाने वाला अनिवार्य भुगतान है, जो करदाता बिना प्रत्यक्ष लाभ के प्राप्ति की आशा के ही देते हैं ।)

Dalton के अनुसारः– कर सार्वजनिक सत्ता द्वारा लगाया गया एक अनिवार्य अंशदान है, चाहे उसके बदले में करदाता को उतनी सेवाएं प्रदान की जाय या नहीं एवं किसी कानूनी अपराध के बदले प्राप्त किया गया रकम नहीं होता।

DE-MARCO के अनुसार : →कर वह मूल्य है जो प्रत्येक नागरिक सरकार को सामान्य सार्वजनिक सेवाओं के लागत के बदले में (जिसे वह उपयोग करेगा) देता है।

उपरोक्त परिभाशाओं से यह स्पष्ट है कि करों की निम्नलिखित विशेषताएं होती है।

(1) कर एक अनिवार्य भुगतान हैं।

(2) कर के बदले आवश्यक रूप से विशेषलाभ प्राप्त नहीं होती है।

(3) कर और आय को सार्वजनिक हित में प्रयोग किया जाता है।

(4) कर किसी विशेष सेवा या लागत का मूला नहीं होता है।

कर मुख्यतः दो प्रकार के होते हैंः – प्रत्यक्ष कर एवं अप्रत्यक्ष कर। प्रत्यक्ष करों का विस्थापन दुसरों पर नहीं किया जा सकता है जैसे आयकर, सम्पति कर आदि। अप्रत्यक्ष करों का आंशिक या पूर्ण रूप से विस्थापन किया जा सकता है, जैसे –उत्पादकर विक्रय

करो का उद्देश्य :–

1) राष्ट्रीय आय को आवश्यक स्तर पर बनाए रखना : → कर सिर्फ आय प्राप्त करने का साधन ही नहीं है बल्की करों के द्वारा आर्थिक लेन–देन को भी प्रभावित किया जाता हैं। जो देश में हो। देश के हित में अर्थात् राष्ट्रीय आय को इच्छित स्तर पर बनाए रखने के लिए करो में कमी तथा कुछ करो में वृद्धि की जाती हैं।

(2) अर्थव्यवस्था का नियमन : – करों के द्वारा अर्थ– व्यवस्था का नियमन भी किया जाता है क्योंकि करों से निजि व्यय प्रभावित होता है Pr- Toylor इसे नियंत्रित करारोपणा कहा है।

(3) आय प्राप्ति का साधन :– सरकार का अधिकांश व्यय करो के द्वारा हो पूरा किया जाता है। अतः करारोपण का मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक व्यय के लिये आय प्राप्त करना होती हैं।

(4) आर्थिक विषमता में कमीः– आधुनिक समय में करों को मुख्य उद्देश्य आर्थिक विषमता को भी धटना होता है। प्रगतिशील करों के अन्तर्गत अमीरों पर ऊँची दर पर कर लगाया जाता हैं। एवं करो से प्राप्त आय को गरीबों या व्यय किया जाता है। जिससे उनकी आय में वृद्धि की जा सके। इस प्रकार करों से आय के विवरण की विषमता धटती हैं।

NON TAX REVENUE

प्रारम्भ में करो को ही आय प्राप्ति का प्रमुख साधन माना जाता है, लेकिन वर्तमान समय में आय प्राप्ति के गैर कर स्रोतों का महत्व बढ़ता जा रहा है। क्योंकि कर आय की एक सीमा होती है। जिससे अधिक कर नहीं लगाया जा सकता है दुसरी ओर करों का उत्पादन पर प्रतिकुल प्रभाव पडता है। गैर कर सरकारी आय को निम्मलिखित चार भागों में बाँटा जा सकता हैं।

(1) प्रशासनिक आय

(2) व्यवसाईक आय (Commercial Revenue)

(3) उपहार एवं अनुदांन (Gift and grabs)

(4) अन्य आय (Other Revenue)

1 प्रशासनिक आय :→ राज्य को कुछ आय की प्राप्ति सरकार के प्रशानिक कार्यों से होती है, जिसे प्रशासनिक आय कहा जाता है जैसे– शुल्क, दण्ड, आदि 'प्रशासनिक आय के अन्तर्गत निम्नलिखित स्रोत आते हैं।

(i) शुल्क आय– : कुछ विशेष प्रकार के सेवाओं के बदले जो रकम सरकार किसी व्यक्ति से प्राप्त करती है उसे शुल्क कहा जाता है जैसेः–→ न्यायालय शुलक।

SHIRRAS के भाब्दोंः–शुल्क विशेष प्रकार के सेवाओं के बदले सार्वजनिक हित में किया गया भुगतान है जिसे जनता स्वेच्छा से स्वीकार करो अथवा म नहीं

MEHTA AND AGRAWAL के अनुसार :– ''शुलक एक कर है जो राज्य द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के उपयोग को नियंत्रिण एवं हतोत्साहित करने के लिए बनाया जाता है।''

उपरोक्त परिभाषाओं से भ्ाुलक कि निम्नलिखित विशेषताएँ स्पष्ट होती है।

(a) शुल्क देने वालों को विशेष सेवा या लाभ प्रदान किया जाता है।

(b) शुल्क स्वेच्छापूर्वक किया जाने वाला भुगतान है।

(c) यद्यपि शुल्क कि राशि वस्तु या सेवा कि लागत पर आधारित होता है लेकिन आवश्यक रूप से यह लागत के रूप में नहीं होता।

(d) शुलक किसी व्यापारिका सेवा को भुगतान नहीं होकर प्रशासनिक सेवा का भुगतान हैं।

शुल्क को एक प्रकार से कर कहाँ जा सकता है। लेकिन शुल्क एवं करों में अंतर होता है। जैसे –करों का भुगतान अनिवार्य होता है जबकि शुल्क का भुगतान एच्छिक होता है. शुल्क का भूगतान विशेष लाभ के लिए किया जाता है। शुल्क सामान्य लाभ के अनुपात में प्राप्त की जाती है जबकि करों के साथ ऐसा बात नहीं है।

(II) विशेष निर्धारण : –

SELIGMAN के अनुसार :→ विशेष निर्धारण एक अनिवार्य अंशदान है जो प्राप्त किये गए विशेष लाभ के अनुपात में लगाए करते है, जिससे सार्वजनिक हित में सम्पति पर विशेष सुधार करने की लागत को पूरा किया जा सकता है।''।

अगर किसी सम्पत्ति में सरकार के द्वारा किय गए व्यय के फलस्वरूप सुधार हो एवं उस समाप्ति का मूल्य बढ़ जाय तो सरकार ऐसे सम्पति पर विशेष शुल्क लगाती है जिसे विशेष निर्धारण कहा जाता है।

अगर किसी सम्पति में सरकार के द्वारा किय गए व्यय के फलस्वरूप सुधार हो एवं उस सम्पति का मूल्य बढ़ जाय तो सरकार ऐसे सम्पति पर विशेष शुल्क लगाती है जिसे विशेष निर्धारण कहा जाता है।

(III) जुर्माना एक सम्पति की प्राप्तीः– यह आय प्राप्ति का एक साधन है जब कोई व्यक्ति देश की कानून का उलधन करता है तो उस पर जुर्माना लगाया जाता है। दूसरी ओर अगर कोई व्यक्ति बिना बसियत किय भर जाता है तो सरकार उसको सम्पति जब जब्त कर लेती है।

(IV) Rates (दरें)–जिला परिषद, नगरपालिका आदि संस्थाएं अपने सीमाओं के अन्तर्गत का स्थानिय जनता की अचल सम्पत्ति से आय प्राप्त करती है उसे दरें कहा जाता हैं।

COMMERCIAL REVENUE- (व्यवसाइक आयु):–

According to Taylor "The commercial Revenue of government are Revival in the form of prices paie by the public for good and resins"

(सरकारी उपक्रमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं एवं सेवाओं के बदले जनता द्वारा चुकाए गये मूल्यों से जो आय सरकार को प्राप्त होती है उसे व्यवसाईक आय कहा जाता है।)

सरकार अनेक प्रकार की औद्योगिक एवं संस्थाओं का संचालन करती है जिससे सरकार को आय प्राप्त होती है। इस उद्योग को चलाने की का मुख्य उद्देश्य सिर्फ आय अर्जित करना ही नहीं होता बलकि राज्य के नागरिकों को उचित मूल्य पर वस्तुएँ एवं सेवाएं उपलब्ध करना भी होता है। सार्वजनिक हित में कुछ निजि उद्योगों को भी सरकार अपने हाथों में ले लेती हैं।

निम्नलिखित कारणों से व्यवसाईक आय प्राप्त करना सरकार के लिए आवश्यक हो जाती है।

(a) राष्ट्रीय महत्व के उद्योग जैसे–सुरक्षा मूलभूत उद्योग अण्विक शक्ति आदि सरकार द्वारा ही चलाए जाते हैं।

(b) संकट की स्थिति में सरकार कुछ वस्तुओं का व्यापार प्रारम्भ करती है।

(c) जनउपयोगी सेवार्थ जैसे– विद्युत जलापूर्ति आदि

(d) कुछ उद्योग जो निम्न दक्षता के कारण अधिक लाभ नहीं कर पाते सरकार अपने हाथों में ' ले लेती हैं।

Dr. V. K. R.V. Raw:-

विकासशील देशों की सार्वजनिक उपक्रम के वस्तुओं को लाभ पर बेचा जाना चाहिए जबकी जीवन रक्षक आवश्यक वस्तुओं को लागत पर ही बेचा जाना चाहिए।

(3) उपहार एवं अनुदानः–

सरकार को कुछ आय उपहारों से प्राप्त होता है कुछ नागरिक सरकार को विशेष करों के लिए उपहार देते है जैसे उपहार में भूमि विद्यालय या अस्पताल का निर्माण आदि। 'यह स्वेच्छा से दिया जाता है एवं दाता को आवश्यक रूप से लाभ प्राप्त नहीं होता सरकार को अनुदान के रूप ''में दुसरे देशों एवं अन्तराष्ट्रीय संस्थाओं से भी आय प्राप्त होता हैं।

।) अन्य आय (OTHER REVENUE)

उपरोक्त स्त्रोतों के अतिरिक्त सरकार को आय प्राप्त करने के और भी अर्थ है। जैसे :– सार्वजनिक सम्पत्ति से भी सरकार को आय प्राप्त होती है। दूसरी और हानिवित भी सरकार के आय प्राप्त कसे का एक अच्छा साधन है। कुछ वस्तुओं का उपयोग नियंत्रित

करों के लिए सरकार विशेष duty लगती है जो इसके आय प्राप्ति का एक स्त्रोत बन जाता है।

सरकारी सम्पति व उधोग धंधेः—सरकार को वन खानों, नहरों सरकारी इमारतों आदि के बेचने तथा पहरे पर देने से काफी आय प्राप्ति होती है सरकार अपने अधिकार में बहुत से कारखानें भी चलाती है जिनमें तैयार वस्तुओं की विक्री से काफी आय प्राप्त हो जाया करता है।